M. A. Semester - I
Philosophy CC-02
Unit - I

Dr. Ragini Kumari
Associate Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

Concept of Universal Religion according to Vivekananda
(Part - II)

विवेकानन्द के अनुसार सार्वभौम धर्म के लिए दो शर्तों का पालन करना होगा। पहली बात जन्म से धर्म निश्चित नहीं होना चाहिए। दूसरी बात है कि सार्वभौम धर्म सभी सम्प्रदायों को सामान्य रूप से सन्तुष्ट करता है, क्योंकि वह किसी भी साम्प्रदायिक धर्म से अधिक व्यापक है।

"If there is ever to be a universal Religion, it must be one which will have no location in place or time; which will be infinite like the God it will preach and whose sun will shine upon the followers of Krishna and of christ, on saints and sinner alike; which will not be Brahmanic or Buddhistic, Christian or Mohammedan, but the sum total of all these, and still have infinite scope for development."
(Swami Vivekananda, Jnana yoga P.19)

विवेकानन्द के अनुसार सार्वभौम धर्म ईसाई धर्म, बौद्ध धर्म, हिन्दू धर्म के तत्वों तक सीमित नहीं रहता है। सार्वभौम धर्म सभी धर्मों का योगफल ~~है~~ भी नहीं होता है। विवेकानन्द का झुकाव वेदान्त धर्म की ओर कुछ अधिक जान

पड़ता है। वे वेदान्त धर्म को सार्वभौम धर्म की संज्ञा देना चाहते हैं, क्योंकि इनके अनुसार वेदान्त धर्म अन्य धर्मों की सामान्य कमजोरियों से परे है। विवेकानन्द ने सार्वभौम धर्म के स्वरूप को स्पष्ट करने के क्रम में बार-बार यह बतलाना चाहा है कि सार्वभौम धर्म ~~के स्वरूप को स्पष्ट करने के~~ का यह अर्थ नहीं है कि सभी धर्मों की मुख्य बातों एवं सामान्य बातों को लेकर एक नया सार्वभौम धर्म प्रतिपादित किया जाय।

"..... The christian is not to become a Hindu or a Buddhist nor a Hindu or a Buddhist to become a christian. But each must assimilate the spirit of the others and yet preserve his individuality and grow according to the law of growth."
D. V. Athalye, Swami Vivekananda. P.117)

स्वामी जी ने कभी भी हिन्दू धर्म को वरण करने या ईसाई धर्म को परित्याग करने की बात नहीं की। उन्होंने वेदान्त धर्म का उद्घोष किया जिससे एक ईसाई अच्छा ईसाई बन सके, एक मुसलमान अच्छा मुसलमान बन सके।

'Universal Religion' कोई 'The Religion' नहीं हो सकता है बल्कि यह सदा 'A Religion' होगा। धर्म के सामान्य तत्व हो सकते हैं, किन्तु 'सार्वभौम धर्म' नामक कोई धर्म नहीं हो सकता है। कहने का तात्पर्य है कि विवेकानन्द वेदान्त धर्म के अतिरिक्त, किसी धर्म को सार्वभौम धर्म नहीं मानते।

इस प्रकार हम पाते हैं कि विवेकानन्द के अनुसार 'सामान्य धर्म' का आदर्श है—

dynamic, open, Progressive, revolutionary, all-embracing और Integral होना। साथ ही विवेकानन्द के अनुसार सार्वभौम धर्म को वैज्ञानिक भी होना चाहिए।

आलोचना — यूँ तो विवेकानन्द का सार्वभौम धर्म का विचार काफी व्यापक रहा है, किन्तु Romain Rolland ने विवेकानन्द के इस विचार का कि, सिर्फ 'वेदान्त धर्म' ही सार्वभौम धर्म कहा जा सकता है, विरोध करते हैं Romain Rolland का कहना है कि Absolute की धारणा न केवल वेदान्त धर्म में है, बल्कि ईसाई धर्म में भी है। अतः यह वेदान्त का एकमात्र Idea नहीं रह जाता। वे लिखते हैं-

Vivekananda merely made the mistake common to most Indians that the Advaita was the sole possession of India. The Absolute is the keystone of the great arch of christian metaphysics as well as of certain of the highest philosophies of the ancient world. If it is to be hoped that India will study these other expression of the divine Absolute at first hand and so enrich her own conception.
(The life of Vivekananda and the Universal Gospel, P. 261,)

किन्तु Romain Rolland की उपर्युक्त आलोचना के प्रत्यालोचनास्वरूप Dr. R.S. Shrivastava का कहना है कि विवेकानन्द ने Western Religion का गहरा अध्ययन किया है और तत्पश्चात् अपना

यह विचार किया कि अद्वैत वेदान्त धर्म ही सार्वभौम धर्म है। डा० रमा शंकर श्रीवास्तव की मान्यता है कि यदि किसी धर्म में 'I am God' 'you are Braham' की अवधारणा नहीं है तो वह धर्म Absolustic और Universal नहीं हो सकता। ईसाई धर्म के साथ भी यह कमजोरी विद्यमान है अत: यह भी Absolustic और Universal Religion होने का दावा नहीं कर सकता।

इस प्रकार हम पाते हैं कि विवेकानन्द का सार्वभौम धर्म सम्बन्धी विचार समकालीन भारतीय चिन्तन को काफी समृद्ध किया है।

X——————————X